P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कथाकार हृदय नारायण मेहरोत्रा ''हृदयेश'' का राजनीति दर्शन

विनीता रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
कन्या महाविद्यालय आर्य समाज,
भूड़, बरेली

सारांश

राजनीति वह सब शास्त्र अथवा विज्ञान है जो राजा और प्रजा को सम्यक् जीवनयापन हेतु सिद्धान्त निरूपित करता है। राज्य के सम्यक् संचालन और समाज के सुचारू संचरण हेतु राजनीतिक सिद्धान्तों का अनुपालन आवश्यक समझा जाता है। डा0 भक्तराज शास्त्री के अनुसार, ''सामाजिक परिष्कार हेतु राजनीति का सहारा लाभप्रद होता है। किसी देश की संस्कृति पर वहाँ की राजनीति का प्रभाव पड़ता है राजनीति का कलुषित स्वरूप संस्कृति को अकलुषित नहीं छोड़ता। अतएव, कालिमाविहीन राजनीति सांस्कृतिक विकास में सहायक है।''[7]

आधुनिक युग में सम्पूर्ण विश्व में धर्म विषयक मान्यताओं के ह्रास के कारण राजनीति का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हो गया है वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता दिख रहा है। आज राजनीतिक व्यवस्था एकदम बदल गयी है। अब केवल और केवल कुर्सी को महत्व दिया जाता है। आज जो भी राजनीति के क्षेत्र में आता है उसका कुछ न कुछ मकसद होता है अब चाहें वो राज करने का मकसद हो या पैसे कमारे का। इस मकसद से हटकर भी कुछ लोग सत्ता में आना चाहते हैं या आते भी है जिनका उद्देश्य होता है कि वो आम जनता के लिए कुछ कर सकें और उनका अधिकार दिलवा सकें परन्तु ऐसे लोगों की जनसंख्या बहुत कम है।

आज के विश्व में हर प्रबुद्ध नागरिक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राजनीति सम्बद्ध रहता है। लोकतंत्र, आज के राजनीतिक संसार का आधार है। आज की दुनिया में न कोई किसी का राजा है और न कोई किसी की प्रजा।[8] जिन देशों में राजतंत्र है, वहाँ भी स्वेच्छाचारी शासक न होकर प्रजा का हितैषी और जनसेवक है। साहित्यकार केवल मतदान के रूप में राजनीतिक दायित्व का निर्वहन करता है। हृदयेश जी ने अपने कथा साहित्य में युग जीवन को अभिव्यक्ति देने के साथ ही अपनी राजनीतिक चेतना को भी अभिव्यक्त किया है।

मुख्य शब्द : राजनीति, साहित्य, कथाकार, हृदयेश, न्याय व्यवस्था।

प्रस्तावना

सभ्यता के विकास के फलस्वरूप मनुष्य का जीवन क्रम अधिक जटिल हो गया है, अतः साहित्य का क्षेत्र विस्तार भी बढ़ गया है। राजनीति आधुनिक जीवन का अभिन्न अंग है।[9] स्वाभाविक ही साहित्य भी राजनीति से प्रभावित हुआ है। प्रभाव की दृष्टि से देखा जाय तो मनुष्य पर किसी देखी हुई साधारण घटना की अपेक्षा किसी भागी या पढ़ी हुई घटना का प्रभाव अधिक गहरा और स्थायी पड़ता है। मनुष्य साहित्य के माध्यम से अपने आवेष्ठन के विभिन्न पहलुओं के ज्ञान को अर्जित करना चाहता है, क्योंकि उनका सम्बन्ध सीधे उनके जीवन से हेता है। ''विविध युगों का साहित्य अपने–अपने युगकी छाया को अपने आप में लिये रहता है यह बहुत सामान्य बात है कि प्रत्येक युग की कुछ अपनी विशेषतायें होती हैं। चूँकि युग स्वयं साहित्य में प्रतिबिम्बित होता है। अतः यह स्वाभाविक हो जाता है कि युग की विशेषतायें भी किसी न किसी रूप में समावेशित हो जाए। उदाहरण के लिए यदि किसी देश की शासन व्यवस्था में कोई बड़ा अन्तर आ जाता है, या उसका शासन सूत्र एक जाति के हाथ से निकलकर दूसरी जाति के हाथ में चला जाता है तो वहाँ विभिन्न क्षेत्रों में बड़े–बड़े परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन अनिवार्य होते हैं, यद्यपि इनके परिणाम सदैव एक से होते हैं, यह नहीं कहा जा सकता है। परन्तु मूल रूप से इन प्रयत्नों के पीछे उद्देश्य यही रहता है कि वे समग्र रूप से देश की प्रगति में सहायक हो।''[10]

हृदयेश जी भी साहित्य पर राजनीति का प्रभाव स्वीकार करते हैं। यदि राजनीति श्रेष्ठ होती है तो साहित्य भी श्रेष्ठ होता है और यदि राजनीति भ्रष्ट होती है तो साहित्य में भी भ्रष्टाचार का उल्लेख करके उसे समाप्त करने की प्रक्रिया पर भी जोर दिया है। उनके अनुसार, ''आज राजनीति देश के केन्द्र में है और उसी से जीवन के सारे क्रियाकलाप संचालित हो रहे हैं। राजनीति अति भ्रष्ट हो गई है। इसलिए धर्म, दर्शन, ज्ञान विज्ञान, कला–संस्कृति आदि सबको उसने दूषित किया है। जब एक रचनाकार पग–पग पर भ्रष्टाचार को अनुभव कर रहा है और उसका दृष्टिकोण एकान्तिक बनकर पलायनवादी नहीं है, स्वाभाविक है कि बार–बार उस भ्रष्टाचार को पाठकों के सामने उजागर करे कभी उसके एक रूप का, कभी दूसरे रूप का। चूँकि यह जीवन सारी सुखद आकांक्षाओं के साथ जीने के लिए है, इसलिए जो गलत है उसका बदल जाना आवश्यक है।[11]

हृदयेश जी ने राजनीति के बिगड़ते हुए प्रभाव को अपनी रचनाओं में प्रदर्शित किया है और यह बताने का प्रयत्न किया है कि किस प्रकार जनतांत्रिक मूल्यों का पतन हो रहा है। उन्होंने अपनी 'गुजंलक' कहानी में दुर्गेश्वर के माध्यम से कहा है – ''राजनीति धर्म नहीं आज एक धंधा है। देश प्रेम के नाम पर घर प्रेम हो रहा है। जनता जो इन नेताओं से पाती है वह किसी किस्म की राहत के बजाय झूठे वायदे बहकावे, कष्ट और अपमानों का एक अूटूट सिलसिला। दरअसल ये रक्षक नहीं भक्षक हैं।''[12]

हमारे देश की राजनीति सिर्फ अमीरों को गले लगाती है। भ्रष्टाचार ने राजनीति को इतना पतित किया है कि राजनेताओं को भ्रष्टाचार करते समय अपनी गरिमा व मर्यादा का भी ख्याल नहीं रहता है। ''देश की राजनीति अति दूषित है। नेतागण अपने त्याग और बलिदान की हुंड्डियां भुना रही हैं। योजनायें दफ्तरों में कागजी मस्तिष्कों द्वारा बन रही हैं जिनका कार्यान्वयन भी केवल कागजों पर होता है। देश की अर्थनीति ऐसी है कि गरीब अधिक गरीब हो रहा है और धनवान अधिक धनवान। 'बापू' नाम ताबीज और गुंडे के रूप में प्रयुक्त हो रहा है।''[13]

आज राजनीति ने वह रूप धारण कर लिया है कि जितने अनुचित कार्य हों वह सभी राजनीति के अन्तर्गत आ जाते हैं। आज समाज के हर भ्रष्ट व असामाजिक तत्व के पीछे देश के राजनीतिज्ञों का हाथ रहता है। इनके हाथ होने से वह अत्यन्त घृणित कार्य करने में भी सफल हो जाते हैं, क्योंकि उनको यह पूर्ण विश्वास होता है कि प्रथम तो हम पकड़े नहीं जायेंगे यदि दुर्भाग्यवश कहीं पकड़ भी जाते हैं तो हमारे विरूद्ध कार्यवाही नहीं होगी।

हृदयेश का राजनीति दर्शन

समाज को राजनीति से जोड़ना वर्तमान युग का आग्रह है। आज का समाज राजनीति के हाथों की कठपुतली बनकर रह गया है। इसी को ध्यान में रखते हुए हृदयेश जी ने अपने कथा–साहित्य में अपने विचारों की पुष्टि की है। उन्होंने अपने 'दंडनायक' उपन्यास में भ्रष्टाचार, खींचातानी, सत्तालोलुपता और लूट–खसोट का वर्णन किया है। ''अगर इन लोगों से सवाल किया जाये कि तीन साल के अपने शासन–काल में कौन–सा काम किया है तो इनके पास कोई जबाब नहीं होगा। आप सब जानते हैं कि इनकी खिचड़ी सरकार का हर घटक कुर्सी–बाँट के लिए बेशर्मी से लड़ता रहा, हर घटक के पास प्रधानमंत्री की कुर्सी छीनने के लिए अपना–अपना पहलवान था। इनकी तमन्ना थी कुर्सी, इनका लक्ष्य था कुर्सी, इनकी हर कोशिश थी कुर्सी। इन तीन वर्षों में राष्ट्रीय कोष कम हो गया। देश दिवालिया बना दिया गया। किसी लोक–कल्याणकारी योजना में पैसा खर्च करने की बजाय इनकी सरकार ने कमीशन बैठाने में पैसा खर्च किया। हम तो कुछ करेंगे नहीं, हमसे पहले जो किया गया है, उस किए कराये पर पानी जरूर फेर देंगे।''[14] इन्हीं भ्रष्टाचारियों के कारण आज देश तबाही की ओर अग्रसर होता जा रहा है। राजनीति से संबंधित हर व्यक्ति कुर्सी के पीछे भाग रहा है। अप्रैल 1999 में प्रधानमंत्री बनने की लालसा ने सोनिया गाँधी को जयललिता की शरण में पहुँचा दिया और बसपा नेत्री मायावती ने कुछ ऐसी माया रची कि भा0ज0पा0 सरकार एक मत से धाराशायी हो गई। सत्ता–लोलुपता के इस कुचक्र ने भारत सरकार को दस हजार करोड़ रूपये के गर्त में डाल दिया। हत्या, मारकाट आदि का नंगा नाच बेशर्मी से खेला गया। परिणाम? बी0जे0पी0 और सशक्त होकर सत्तारूढ़ हो गई। राजनीति के इस घृणित रूप को अभिव्यक्त करते हुए हृदयेश जी अपनी 'अफवाहें' में राजकिशोर के माध्यम से कहते हैं – ''राजनीति देश के हित में बड़े उद्देश्यों को लक्ष्य बनाकर देश में रहने वाले तमाम जनों को समता और प्रेम के सूत्र में जोड़ने के लिए है, न कि नफरत की दीवारें उठाकर उनको छोट–छोटे टुकड़ों में बांटने के लिए। राजनीति का रूप बहुत घृणित हो गया है। वह गलत हाथों में चली गयी है। वह गुंडों और बौनों की फसल उगा रही है। उसे व्यवस्था की कुर्सियों पर ऐसे अंधे–बहरे बैठा दिये हैं जो सिर्फ अपनों को ही देख पाते हैं, और सिर्फ अपनों की ही बातें सुन पाते हैं। ऐसी राजनीति देश को ले जाकर कहां छोड़ेगी?''[15]

आज हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है सबकी रक्षा का दायित्व लिए पुलिस विभाग सर्वाधिक भ्रष्ट है। पुलिस विभाग में चरम सीमा तक पहुँचे भ्रष्टाचार को राजकिशोर के माध्यम से हृदयेश जी ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है– ''राजकिशोर के यह बताने पर कि वह तबला वादक है, एक दूसरा वर्दीधारी पुर्जा अश्लीलता से मुस्कराया, 'तब तो यहाँ मुजरा होता होगा। एक तीसरे पुर्जे ने अंदर की कोठरी और गुसलखाना झांक डाला कि वहाँ लड़कियाँ तो नहीं हैं। एक चौथे पुर्ज ने अपने जिस्म को आराम देने के लिए जूतों से कसा दायां पैर तबले पर रख दिया। वह तबला राजकिशोर के किसी कोमल संवेदनशील अंग जैसा था। तबले पर मढ़ा चमड़ा फट गया। पुलिस का दस्ता चला गया।''[16]

राजनीति ने समाज के हर क्षेत्र में अपना स्थान बना लिया है। समाज की हर संस्था राजनीति से प्रभावित है। आज हमारे देश में कोई भी कार्य बिना राजनीतिक हस्तक्षेप के पूर्ण व सफल नहीं हो सकते हैं। सभी कार्यों

की सफलता व असफलता के पीछे राजनीति का ही हाथ है। 'दंडनायक' उपन्यास में खेलों को भी राजनीतिक सम्पदा बताया गया है, ''आजादी से पहले ब्रिटेन हर ओलंपिक में भारत से खेलने से बचता था, क्योंकि अपने ही अधीन एक उपनिवेश की टीम से हार जाने में उसका अपमान था। भारत को तब खेल के मैदान में ब्रिटेन के झडे के पीछे चलना होता था। लेकिन कुछ खिलाड़ी चुपचाप अपने तंबू में तिरंगा झंडा फहराकर सलामी देते थे। उससे जब पूछा गया कि भारतीय हाकी अब अपनी साख क्यों खोती जा रही है, तो उसने अंदर उमड़ आई पीड़ा को दबाते हुए कहा कि एक तो दूसरे राष्ट्रों ने अपने खेल के नियमों में अपने अनुकूल परिवर्तन कर लिए हैं, दूसरे हमारे देश में खेलों में भी राजनीतिक हस्तक्षेप होने लगा है। आज खेलों में काफी पैसा मिलता है। वहाँ ग्लैमर भी अब बहुत है। सच्ची प्रतिभाओं के हक को मारकर मंत्री या कोई अन्य प्रभावशाली व्यक्ति अपने सगे संबंधियों को टीम में जबरदस्ती पच्ची कर देता है। भारतीय हाकी के पतन का सबसे बड़ा कारण यह राजनीतिक घुसपैठ, भाई भतीजावाद और चमचागिरी है।''[17]

हृदयेश जी ने 'दंडनायक' में ऐसे लोगों का पर्दाफाश किया है, जो राजनीति का गलत उपयोग करके अपने निजी स्वार्थों को अंजाम दे रहे हैं, ''गर्ग ने रेलवे की करीब पाँच एकड़ जमीन का पट्टा यह जताते हुए अपने नाम करा लिया था कि वहाद्द वह महात्मा गांधी कुष्ठ आश्रम खोलेगा। वहां चंद झोपड़ियाँ डालकर उसने साल–छह महीने चार–पाँच कोढ़ी बसाए, फिर उनको भगा दिया। अब एक बड़े हिस्से में उसने पपीते और केले का बाग लगा रखा है, जिसकी लाखों रूपए की फसल वह बेचेगा।''[18]

हमारा राष्ट्र उन्नति व सफलता की उच्चतम शिखर तक तभी पहुँच सकता है, जब हमारे देश के नेता भ्रष्टाचार को त्यागकर ईमानदारी व स्वदेश प्रेम की भावना को अपना लें। 'पहल' कहानी के इन्दरलाल कहते हैं – ''मैं हर उस पार्टी का हूँ जो तरक्की पसन्द है और आम आदमी का जीवन स्तर उठाना चाहती है। वह जलसे से लौटकर यह भी कहते हैं कि हमारे नेताओं पास अच्छे सिद्धान्तों और नेक प्रोग्रामों की कमी नहीं है। बस उन पर ईमानदारी और सही ढंग से अमल हो जाए तो नतीजे अच्छे हासिल हो सकते हैं।''[19]

हृदयेश जी ने न्याय व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार का मूल कारण राजनीतिक पतन माना है। ''हृदयेश जी का प्रयास रहा है कि इस न्याय तंत्र का पूरा पाचन–संस्थान दिखायें, पता लगे कि जिसे हम न्यायालय कहते हैं, वह वास्तव में है क्या? उसमें कितने रूपों में सत्ता मौजूद रहती है? गांधी जी का चित्र वहां कैसा टेढ़ा होकर लटका रहता है और न्याय की प्रक्रिया कितनी क्रूर–वीभत्सता के साथ रेंगती रहती है। यह दशा तो उन मुकदमों की है, जो दायर हो चुके हैं – हाल ही में न्याय के कुछ ऊँचे उदाहरण भी भारतीय संस्कृति का हिस्सा बने हैं। तीस साल तक बिना मुकदमें बन्द रहने वाले लोग, अब समाज में प्रकट हुए हैं। लेकिन कुछ नहीं कहा जा सकता। प्रधानमंत्री ने सफाई दे दी है – ''लोकतन्त्र में सब चलता है।''[20]

राजनीति की भ्रष्टता को देखते हुए देश के नागरिक वोट डालने जैसे अपने महत्वपूर्ण अधिकार को अपनाते हुए भी इस संशय में पड़े रहते हैं, कि किस उम्मीदवार को चुनें? रोशन सिंह के माध्यम से हृदयेश जी ने देश के नागरिकों की इस कथा को प्रस्तुत किया है। ''वह निर्णय नहीं ले पा रहा था कि इस बार अपना वोट किसको दें। मनोहर लाल भी सत्ता की कुर्सी पर बैठकर खरे साबित नहीं हुए थे। पंडित जी के विरूद्ध तरह–तरह के आरोप तो थे ही, जिले के लिए उन्होंने कुछ किया भी नहीं था। दूसरे उम्मीदवार भी जनसेवा को पेशा बनाने वाले छँटे हुए लोग थे। वोट डालने जैसा महत्वपूर्ण अधिकार नागरिक को कभी–कभी ही मिलता है। इस अधिकार के आकर्षण से खिंचा हुआ वह मतदान केन्द्र में एक घंटा लाइन में लगकर अन्दर पहुँच तो गया था लेकिन मत–पत्र पर छपे सारे उम्मीदवारों में से किसी को भी अपना प्रतिनिधि बनने के योग्य न पाकर वह बिना मुहर लगाए हुए सादे मत–पत्र को पेटी में डालकर बाहर निकल आया था।''[21] हृदयेश जी ने देश में व्याप्त सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक, भ्रष्टाचार का तीव्रता से विरोध भी किया है। वह देश व देश के नागरिकों को भ्रष्टाचार व अन्याय की पीड़ा से मुक्त करके उन्हें स्वस्थ व उन्नत जीवन देना चाहते हैं। कुर्सी पाने की लालसा में गरीबों के शोषण करने वाले नेता उन्हें कतई पसन्द नहीं है। वह देश व देशवासियों को यह संदेश दिया है कि वे जागरूक होवें और अन्याय व भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़े। उन्होंने अपनी कहानी 'छोटे शहर के लोग' में गिरधर के माध्यम से देशवासियों तक अपना यह संदेश पहुँचाया है – ''देश के सही विकास और राष्ट्र कर्णधारों को सजग रखने के लिए जनता में राजनीतिक जागरूकता होना परम आवश्यक है। अभाग्यवश हमारी देश की जनता इस मायने में बहुत पीछे है। यहाँ हर चीज के अपने स्वार्थ के चश्में से देखा जाता है। मैं कोशिश करूंगा कि मेरा पत्र इस दिशा में कुछ कार्य कर सके। वह हर पार्टी की नीति की स्वस्थ आलोचना करेगा और देश के व्यापक हितों को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर आने वाली समस्याओं के सुझाव के लिए ठोस सुझाव रखेगा।''[22] 'छोटे शहर के लोग' के गिरिधर से चुनाव लड़ने तथा मिनिस्टर बनने के प्रश्न पूछे जाने पर वह कहता है – ''नहीं, मेरा इस ओर कोई इरादा नहीं है। विधानसभा और लोकसभा के बाहर रहकर मैं अपना कार्यक्षेत्र बनाना चाहता हूँ। पार्टी को मजबूत बनाने के लिए जनता के बीच जाकर काम करना चाहिए – डा0 लोहिया का कहना था।''[23]

हृदयेश जी ने अपने पात्रों के माध्यम से अपने सही लक्ष्य से भटकी हुई राजनीति को सही दिशा देने का प्रयत्न किया है। गिरिधर के अनुसार ''राजनीति में ऐसे युवकों की आवश्यकता है जो प्रबुद्ध और उत्साही हो। राजनीति भ्रष्ट नीति बनी हुई है, उसे धर्मनति बनाना है।''[24] हृदयेश जी देश को सबल व निश्चल उन्नति की राह पर चलते हुए देखना चाहते हैं और अपनी इस अभिलाषा के पूर्ण करने के लिए वह साहित्य के माध्यम से यथासम्भव प्रयास भी कर रहे हैं।

समाहार

अंग्रेजी के Politics शब्द का हिन्दी पयार्य है राजनीति। राजनीति शब्द से ही स्पष्ट है कि वह स्वयं में राजा की नीति अथवा राज्य की नीति – इस अर्थ को समेटे हुए है। समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था सुचारू रूप से चलाने के लिए राजा की आवश्यकता होती है। समाज के द्वारा नीति का पालन न होने पर दण्ड की व्यवस्था जिन इकाईयों पर अवलम्बित होती है, उन्हें राजनीतिक संस्थायें कहते हैं। इन राजनीतिक संस्थाओं के अन्तर्गत – विधायी शक्ति, कार्यकारी शक्ति और न्यायिक शक्तियाँ आती हैं। विधायी शक्ति – राज्य संचालन के लिए नियम बनाती है। कार्यकारी शक्ति – उन नियमों को राज्य निवासियों द्वारा पालन करने की प्रेरणा देती है एवं न्यायिक शक्ति न्यायपालिका द्वारा किये गये कार्य की परख एवं दण्ड व्यवसाी करती है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज को संचालित करने वाली राजनति का प्रभाव साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक ही है। उपन्यासों पर राजनीति का विशेष प्रभाव पड़ा है। राजनीतिक उपन्यास भारतेन्दु अथवा द्विवेदी युग की देन है। राजनीतिक उपन्यासों का विकास विशेष रूप से प्रेमचन्द युग से दिखाई पड़ता है। राजनीतिक उपन्यासों की परम्परा में बहुत बड़ी संख्या में ऐसे उपन्यास प्राप्त होते हैं, जिनमें साम्यवादी, गांधीवादी तथा अन्य विचारधाराओं का पोषण हुआ है। कुछ ऐसे भी उपन्यास हैं, जो पूर्णरूपेण राजनीतिक नहीं है, किन्तु उनमें राजनीतिक विचारधारा का अप्रत्यक्ष चिन्तन, समर्थन संकलित है। डा0 रांगेय राघव का 'विषादमठ' नामक उपन्यास इसी प्रकार की रचना है।

हृदयेश जी के कथा साहित्य में राजनीति – निरूपण का सम्यक् अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि उनके साहित्य में वर्तमान राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, बेईमानी, देश के साथ धोखा आदि जैसी बुराईयों का पर्दाफांश हुआ है। उन्होंने देश की खोखली राजनीति से होने वाले राष्ट्र पतन की ओर चिन्ता व्यक्त की है। उनके हृदय में देश के उत्थान तथा जागरूकता के प्रति जो आकांक्षा है, उसे उन्होंने अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है। उनके कथा साहित्य की यह विशेषता रही है कि राजनीतिक तत्वों का विवेचन उपन्यासों व कहानियों की साहित्यिक विशेषताओं पर हावी नहीं हो सका है। उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक भ्रष्टाचार, अन्याय व शोषण को अपने साहित्य के माध्यम से जन–जन की दारूण व्यथा – कथा बना दिया है, साथ ही साथ उसके समाधान हेतु अपने विचार भी प्रस्तुत किये हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. जनकल्याण के प्रति उदासीनता समाप्ता करना।
2. दृढ़ राजनेतिक, इच्छाशक्ति प्राप्त करने हेतु राजनीतिक स्थिरता आवश्यक है।
3. श्रेष्ठ और आदर्श राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण के लिए कानून बनाया जाए।
4. विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, विधिक प्रणाली, उनके विचार और उनकी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक स्थितियों में एकरूपता स्थापित होनी चाहिए।

आपका मानना है कि समाज में समय–समय पर परिवर्तन होते रहते हैं, जो कि अत्यन्त आवश्यक है। आपने स्वतन्त्रता से पूर्व एवं बाद में भारत की स्थिति व परिवर्तन पर अत्यन्त गहराई से ध्यान दिया। आपके कथा साहित्य में जहाँ एक ओर देश से प्रेम करने वाले पात्र दिखाई पड़ते हैं, वहीं कुछ पात्र अंग्रेजों की गुलामी करते हुए भी दिखाई दिये हैं। आपसे भ्रष्ट राजनीति का यथार्थपरक चित्रण किया है। स्वार्थी व धनलोलुप अधिकारी, कुर्सी व सत्ता के मद में चूर हुए नेता, निर्दोष व मासूम जनता को प्रताड़ित करती हुई आर्मी, निरपराधी को फाँसी की सजा सुनाने वाला न्यायाधीश आदि का यथार्थवादी चित्रण करके अपने देश व देश के नागरिकों को जागरूकता व देश प्रेम का संदेश दिया है, ताकि वह इन भ्रष्ट सत्ताधारियों का डटकर मुकाबला कर सकें और अपने देश को स्वस्थ व सुनहरा भविष्य प्रदान कर सकें।

साहित्य अथवा रचना उसी को कहा जाता है, जो मानव मात्र का हित साधन करे। यदि साहित्य सत्त की लोलुपता का मोह छोड़कर पूर्ण ईमानदारी एवं निष्ठा से राजनीति से प्रेरित हो तो वह भ्रष्ट नहीं हो सकेगा। ''साहित्य राजनीति का अनुचर नहीं वरन् उससे भिन्न एक स्वतन्त्र देवता है और उसे पूरा अधिकार है कि जीवन के विशाल क्षेत्र में से वह अपने काम के योग्य सभी द्रव्य उठा लें जिन्हें राजनीति अपने काम में लाती है। कार्लमार्क्स और गाँधी जी का यह विचार है कि जीवन की अवस्था विशेष की अनुभूति से वह राजनीति का सिद्धान्त निकाल ले तो एक कवि (साहित्यकार) को भी यह अधिकार सुलभ होना चाहिए कि वह ठीक उसी अवस्था की कलात्मक अनुभूति से ज्वलन्त काव्य की सृष्टि करे। अगर राजनीति अपनी शक्ति से सत्य की प्रतिभा गढ़कर तैयार कर सकती है, तो साहित्य में भी इतनी सामर्थ्य है कि वह मुख से जीभ धर दे।''[25]

हृदयेश जी यथार्थवादी लेखन के संदर्भ में लिखते हैं कि श्रेष्ठ रचना की कसौटी आखिर क्या है? क्या साहित्य के द्वारा पूरा राजनीतिक अर्थशास्त्र पढ़ाना? पार्टी लाइनों की स्थूल व्याख्या करना? तदनुसार राजनीतिक निष्कर्ष देना नहीं। इनमें से किसी को भी कसौटी नहीं बनाया जा सकता। साहित्य की श्रेष्ठता की एकमात्र की कसौटी है – जीवन का सही परिप्रेक्ष्य में चित्रण। बीता हुआ जीवन बीत रहा और आने वाला जीवन। दिलचस्प बात यह है कि दुनिया की कोई भी कम्युनिस्ट पार्टी जिस जीवन को आधार बनाकर अपना होमवर्क करके निकालती है और यदि साहित्यकार बिना उस जीवन में झांके ज्यों की त्यों वह लाइन अपनी रचना में उतार देता है, तो क्रान्ति के लिए इससे घातक दूसरा रवैया उसका कोई नहीं। मार्क्सवाद यानी रणनीतियाँ, कार्य नीतियाँ, आर्थिक राजनीतिक अध्ययन, यह सारी सामग्री जीवन को व्यापक और गहरे रूप में समझने के लिए है न कि स्वयं में रचना की कच्ची सामग्री। यह ज्ञान जीवन को समझने में तो सहायक हो सकता है, साहित्य के क्षेत्र में जीवन का स्थानापन्न नहीं हो सकता।

साहित्य को केवल राजनीति पर आधारित नहीं होना चाहिए।[26] इसे संसार के सुख, दुख, न्याय, अन्याय आदि का भी अवलोकन करना चाहिए। क्योंकि साहित्यकार को ईश्वर के समान कहा गया है।[27]

विषम परिस्थितियों में भी उसे अपने इस उदात्त स्थान को बनाये रखना है। इतिहास साक्षी है कि पूर्व काल के ऋषियों, कवियों तथा मनीषियों ने राजनीतिक विधानों तथा सामाजिक अनुशासनों का भी निर्माण किया है। वे लोग स्वतंत्र आदर्शमूलक, सिद्धान्तों के अनुसार चलने की प्रेरणा दिया करते थे।[28]

निष्कर्ष

आज आवश्यक है कि हमें कुशल राजनीतिक व्यवस्था के लिए जनजागरण करना होगा और यह कार्य भारत के युवा वर्ग को विशेष रूप से अपने हाथ में लेना होगा। कोई कारण नहीं कि वह वर्तमान परिस्थितियों को हमेशा का सच मान लें। परिस्थितियां बदलती हैं और परिस्थितियों को हमें बदलना होगा। इसके साथ ही हमें भारत की सामाजिक परिस्थितियों और सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को समझना होगा। इसके पश्चात् ही एक नयी व्यवस्था सृजन की ओर उन्मुख होगी। तब ही हम ऐसे समाज का निर्माण कर पायेंगे जो कि शांति, समरसता और समृद्धि से भरपूर हो। जहाँ प्रत्येक व्यक्ति का जीवन सफल और अर्थपूर्ण बन सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *ऋग्वेद 10–1785 अथर्ववेद 6–85–88.*
2. *अथर्ववेद 3–5–6 से 7.*
3. *अथर्ववेद व3–4–2.*
4. *अथर्ववेद 4–8 '5, 3–5–5, 3–4–6.*
5. *मनुस्मृति 8–284 से 287, अर्थशास्त्र 6–1.*
6. *प्रो0 शिवदत्त ज्ञानी, भारतीय संस्कृति, पृ0 – 200.*
7. *डॉ0 भक्तराज शास्त्री, आधुनिक हिन्दी : काव्य और संस्कृति, पृ0–15.*
8. *''कौन यहाँ किसका राजा है? किसकी कौन प्रजा है?'' रामधारी सिंह दिनकर, कुरूक्षेत्र पृ0–02.*
9. *''दोनों ही जीवन के अंग हैं एक से गांधी और आर्थिक का तथा दूसरे से प्रेमचन्द और गोर्की का अविर्भाव हुआ।''*
10. *डा0 प्रताप नारायण टंडन, हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास, पृ0– 26–27.*
11. *हृदयेश : सं0 सुधीर विद्यार्थी पृ0–20.*
12. *हृदयेश, गुंजलक (अंधेरी गली का रास्ता) पृ0–23.*
13. *हृदयेश, जाला (छोटे शहर के लोग) पृ0–85.*
14. *हृदयेश, दंडनायक, पृ0–77.*
15. *हृदयेश, अपवाहें (नागरिक) पृ0–15.*
16. *हृदयेश, अपवाहें, (नागरिक) पृ0–17.*
17. *हृदयेश, दंडनायक, पृ0 137.*
18. *हृदयेश, दंडनायक, पृ0–139.*
19. *हृदयेश, पहल (उत्तराधिकारी), पृ0 52–53.*
20. *हृदयेश : संपादक – सुधीर विद्यार्थी (यथार्थवादी साहित्य की समस्याएं) पृ0–199.*
21. *हृदयेश, दंडनायक, पृ0–79.*
22. *हृदयेश, छोटे शहर के लोग (छोटे शहर के लोग) पृ0–124.*
23. *हृदयेश, छोटे शहर के लोग (छोटे शहर के लोग) पृ0–127.*
24. *हृदयेश, छोटे शहर के लोग (छोटे शहर के लोग) पृ0–131.*
25. *डॉ0 जितेन्द्र वत्स, साठोत्तरी हिन्दी कहानी और राजनीतिक चेतना, पृ0–19.*
26. *''लेखक, कलाकार उस देश की राजनीति के पिट्ठू नहीं होते।'' चित्रा मुद्गल मनस्वी वर्ष 2 अंक–8, पृ0–26.*
27. *कविर्मनीषी परिभू : स्वयंभूः ईशावास्योपनिषद्, 8वाँ श्लोक।*
28. *हमारे उपन्यासकारों को देश के वर्तमान जीवन के भीतर अपनी दृष्टि गड़ाकर अपने आप देखना चाहिए, केवल राजनीतिज्ञ दलों की बातों को लेकर ही न चलना चाहिए। साहित्य को राजनीति के ऊपर रखना चाहिए सदा उसके इशारों पर ही चलना चाहिए – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल व– हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0–492.*